

प्रारंभिक परीक्षा

एकीकृत पेंशन योजना (UPS)

संदर्भ

रेल मंत्रालय के हालिया परिपत्र (मई 2024) में **UPS** विकल्पों पर बेहतर संचार पर जोर दिया गया है, जिसमें वित्तीय साक्षरता और कर्मचारी कल्याण पर सरकार के फोकस पर प्रकाश डाला गया है।

एकीकृत पेंशन योजना (UPS) के बारे में -

- यह भारत सरकार द्वारा कर्मचारियों, विशेषकर रेलवे के कर्मचारियों के लिए पेंशन विकल्पों को सरल बनाने के लिए शुरू की गई एक पेंशन रूपरेखा है।
- यह मौजूदा कर्मचारियों को मौजूदा पेंशन प्रणाली और नई पेंशन योजना (NPS) के बीच चयन का विकल्प प्रदान करता है।
- प्रमुख विशेषताएँ:**
 - उद्देश्य:** पेंशन लाभों के संबंध में कर्मचारियों को लचीलापन और स्पष्टता प्रदान करना।
 - उपलब्ध विकल्प:** मौजूदा पेंशन योजना (परिभाषित लाभ योजना)
 - नई पेंशन योजना (NPS) (परिभाषित अंशदान योजना)
 - प्रयोज्यता:** मुख्य रूप से मौजूदा कर्मचारियों को लक्षित करता है (नए कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से NPS के तहत नामांकित किया जाता है)।
- सरकार की पहल:**
 - रेल मंत्रालय ने कर्मचारियों को सूचित निर्णय लेने के लिए जागरूकता अभियान पर जोर दिया है।
 - कर्मचारियों को विकल्पों को समझने और पंजीकरण पूरा करने में सहायता के लिए सुविधा शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

तथ्य -

- भारत में पेंशन सुधार:** UPS पेंशन प्रणालियों को आधुनिक बनाने के व्यापक सुधारों का हिस्सा है।
- नई पेंशन योजना (NPS):** सरकारी कर्मचारियों (सशस्त्र बलों को छोड़कर) के लिए 2004 में शुरू की गई एक अंशदायी प्रणाली।
- परिभाषित लाभ बनाम परिभाषित अंशदान:**
 - परिभाषित लाभ (पुरानी योजना):** वेतन और कार्यकाल के आधार पर निश्चित पेंशन।
 - परिभाषित अंशदान (NPS):** पेंशन बाजार से जुड़े रिटर्न पर निर्भर करती है।

स्रोत: [The Hindu: Inform Employees on details of Unified Pension Scheme, says Railway Ministry](#)

भारत फोरकास्टिंग सिस्टम (BFS)

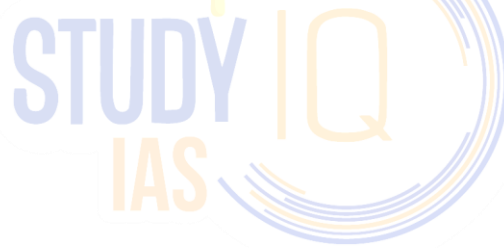
संदर्भ

सटीक और स्थानीयकृत मौसम पूर्वानुमान में सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा भारत फोरकास्टिंग सिस्टम (BFS) का अनावरण किया गया।

BFS के बारे में -

- **यह क्या है?:** भारत फोरकास्टिंग सिस्टम (BFS) भारत सरकार द्वारा हाई-रिज़ॉल्यूशन, स्थानीयकृत मौसम पूर्वानुमान प्रदान करने के लिए शुरू किया गया एक नया मौसम पूर्वानुमान मॉडल है।
- **विकासकर्ता:** भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM), पुणे
- **मंत्रालय के अधीन:** पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
 - पूर्वानुमानित रेज़ॉल्यूशन: 6 किमी – दुनिया में सबसे अधिक
 - छोटे पैमाने पर मौसम की घटनाओं की भविष्यवाणी करने में सक्षम बनाता है
 - पूरे भारत में अधिक स्थानीयकृत एवं सटीक पूर्वानुमान
- **तकनीकी आधार:** 2024 में आईआईटीएम में स्थापित सुपरकंप्यूटर अर्का द्वारा सक्षम
- **महत्व:**
 - आपदा तैयारी, कृषि योजना और शहरी प्रबंधन में सुधार
 - मौसम पूर्वानुमान के लिए वैज्ञानिक बुनियादी ढांचे को बढ़ावा दिया गया
 - जलवायु मॉडलिंग और मौसम विज्ञान में भारत की वैश्विक स्थिति में सुधार

स्रोत: [The Hindu: Government unveiled Bharat Forecasting System \(BSF\)](#)



शिस्टुरा डेंसिक्लावा (Schistura densiclava)

संदर्भ

जीव वैज्ञानिकों की एक टीम ने मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले के क्रेम मावजिम्बुइन गुफा में शिस्टुरा डेंसिक्लावा नामक गुफा में रहने वाली मछली की एक नई प्रजाति की खोज की है।

महत्वपूर्ण तथ्य -

विशेषता	विवरण
प्रजाति का नाम	शिस्टुरा डेंसिक्लावा
में खोजा गया	क्रेम मावजिम्बुइन गुफा, पूर्वी खासी हिल्स, मेघालय
द्वारा खोजा गया	कंगकन सरमा और गौहाटी विश्वविद्यालय की टीम
प्रकार	ट्रोग्लोफाइल लोच - एक गुफा में रहने वाली मछली जो जमीन के ऊपर जीवित रह सकती है
परिवार	नेमाचेइलिडे (स्टोन लोचेस)
प्राकृतिक वास	ठंडी, तेज बहती गुफा धारा (~60 मीटर गुफा के अंदर, 18°C, कम ऑक्सीजन)
अनन्य विशेषताएं	- रंगद्रव्य और दृष्टि बरकरार रखती है (सामान्य गुफा मछलियों के विपरीत)

स्रोत: [The Hindu: Meghalaya's new cave dwelling fish adapts to overground streams](#)

मोसुरा फेंटोनी (Mosura fentoni)

संदर्भ

मोसुरा फेंटोनी कनाडा के बर्गस शेल से हाल ही में खोजा गया कैम्ब्रियन युग का समुद्री जीव है। इसकी एक अनूठी शारीरिक संरचना और उन्नत श्वास अनुकूलन है, जो आर्थ्रोपोड्स के प्रारंभिक विकास में नई अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं पृष्ठभूमि -

- **प्रकार:** विलुप्त कैम्ब्रियन रेडियोडॉट
- **समूह:** रेडियोडॉटा - स्टेम-आर्थ्रोपोड्स का एक विलुप्त समूह
- **सम्बन्ध:** आधुनिक कीटों, केकड़ों और मकड़ियों से दूर का सम्बन्ध
- **युग:** कैम्ब्रियन काल (~500 मिलियन वर्ष पूर्व)
- **स्थान जहां यह पाया गया:** बर्गस शेल, कनाडा - एक जीवाश्म-समृद्ध भंडार जो नरम शरीर वाले जीवों के असाधारण संरक्षण के लिए जाना जाता है

प्रमुख विशेषताएँ -

विशेषता	विवरण
आकार	छोटा (1.5 से 6 सेमी लम्बा)
सेगमेंट	3 अलग-अलग क्षेत्रों में 26 शारीरिक खंड
सिर/गर्दन	छोटी गर्दन छोटे सिर को सहारा देती है
मेसोट्रंक	6 पैडल जैसे फ्लैप - तैरने के लिए प्रोपेलर की तरह उपयोग किए जाते हैं
पोस्टरोट्रंक	गलफड़ों की पंक्तियों के साथ 16 खंड तक - सांस लेने के लिए विशेष
विशेष गुण	पोस्टरोट्रंक एक "श्वास टैगमा" के रूप में कार्य करता है - घोंड़े की नाल केकड़े की पूंछ के समान एक कार्यात्मक श्वास इकाई

स्रोत: [The Hindu: Mosura fentoni](#)

एआई मैट्रियोशका(AI Matryoshka)

संदर्भ

गूगल का "एआई मैट्रियोशका" इसकी स्तरित एआई रणनीति को संदर्भित करता है, जहां एक कोर एआई फाउंडेशन (जेमिनी मॉडल) कई परस्पर जुड़े उत्पादों और सेवाओं को शक्ति प्रदान करता है, बहुत कुछ रशियन नेस्टिंग डॉल (मैट्रियोशका) की तरह।

एआई मैट्रियोशका की प्रमुख परतें -

- **कोर एआई मॉडल (अंतरतम परत)**
 - **जेमिनी 2.5 प्रो और फ्लैश:** उन्नत एआई मॉडल, उन्नत तर्क (डीप थिंक), दक्षता और मल्टी-स्पीकर टेक्स्ट-टू-स्पीच के साथ।
 - **इमेजन 4 और वेक 3:** दृश्य मीडिया निर्माण के लिए एआई।
 - **लिरा 2:** संगीत निर्माण के लिए एआई।
 - **7वीं पीढ़ी के टीपीयू (आयरनवुड)** द्वारा संचालित, उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग प्रदान करता है।
- **प्लेटफॉर्म और API (मध्य परत)**
 - **जेमिनी एपीआई और वर्टेक्स एआई:** डेवलपर्स को एआई को एकीकृत करने में सक्षम बनाता है।
 - **मॉडल संदर्भ प्रोटोकॉल (MCP):** AI एजेंटों को प्रासंगिक डेटा साझा करने की अनुमति देता है।
- **यूजर फेसिंग एप्लीकेशन (सबसे बाहरी परत)**
 - **सर्च में एआई:** उद्धृत रिपोर्टों के लिए "डीप सर्च"।
 - **जेमिनी ऐप:** लाइव फीचर्स, इमेज/वीडियो निर्माण, और गहन शोध (निजी दस्तावेजों तक पहुंच)।
 - **एजेंटिक कॉमर्स:** वर्चुअल ट्राई-ऑन और एआई चेकआउट।
 - **जूल्स (कोडिंग एजेंट):** डेवलपर्स के लिए एआई सहायक।

मुख्य चिंताएं:

- **डेटा निजता:** एआई व्यक्तिगत डेटा का उपयोग करता है (उदाहरण के लिए, जेमिनी में डीप रिसर्च)।
- **कॉपीराइट मुद्दे:** कॉपीराइट सामग्री पर प्रशिक्षित AI मॉडल (उदाहरण के लिए, इमेजन 4, लिरा 2)।
- **डिजिटल डिवाइड:** उन्नत AI सुविधाओं के लिए सशुल्क सदस्यता (Google AI Ultra) की आवश्यकता हो सकती है।

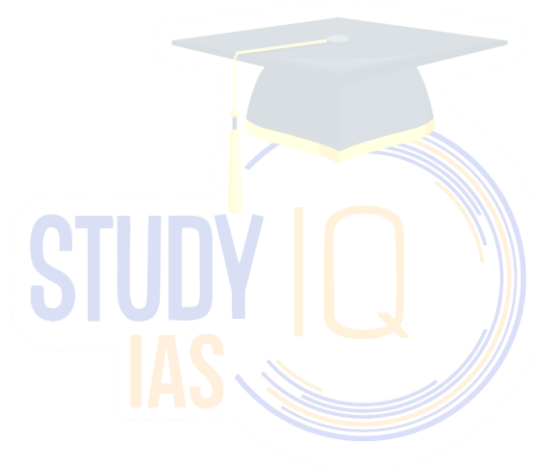
स्रोत: [The Hindu: Google's AI Matryoshka: restructuring the search giant](#)

समाचार संक्षेप में

बोबोनाज़ा नदी



- बोबोनाज़ा नदी इक्वाडोर में स्थित है।
- यह पास्ताज़ा नदी, फिर मारनोन नदी और अंत में पेरू के इक्विटोस में अमेज़न नदी में बहती है।
- इसका मार्ग मुख्य रूप से बड़े पैमाने पर निर्जन अमेज़ोनियन उष्णकटिबंधीय वर्षावन से होकर गुजरता है।
- सरायकू बोबोनाज़ा नदी के किनारे पाई जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण बस्तियों में से एक है।



संपादकीय सारांश

पूर्वोत्तर की विविधता को पहचानकर उसकी क्षमता का दोहन करना

संदर्भ

प्रधानमंत्री मोदी ने राइजिंग नॉर्थ ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट 2025 में पूर्वोत्तर क्षेत्र की अपार संभावनाओं और देश की विकास यात्रा में इसके महत्व पर प्रकाश डाला।

पूर्वोत्तर क्षेत्र की संभावनाएं -

- **रणनीतिक अवस्थिति:** दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से निकटता - बांग्लादेश, भूटान, चीन और म्यांमार के साथ सीमा साझा करना - जो इसे एक्ट ईस्ट नीति के लिए महत्वपूर्ण बनाता है।
- **प्राकृतिक संसाधन:** वन, तेल, प्राकृतिक गैस, कोयला, चूना पत्थर और अपार जलविद्युत क्षमता से समृद्ध।
- **सांस्कृतिक विविधता:** विविध परंपराओं, त्योहारों और शिल्पों के साथ 200 से अधिक जातीय समुदायों का घर - सांस्कृतिक पर्यटन के लिए आदर्श।
- **जैव विविधता हॉटस्पॉट:** पूर्वी हिमालय और भारत-बर्मा क्षेत्र दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों के कारण इसे पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण बनाते हैं।
- **कृषि-जलवायु विविधता:** जैविक खेती, बागवानी (अनानास, संतरा, अदरक, बांस) और फूलों की खेती के लिए उपयुक्त।
- **पर्यटन सम्भावनाएँ:** मनोरम परिदृश्य (केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, जीरो घाटी), साहसिक पर्यटन (ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग) और आध्यात्मिक पर्यटन (बौद्ध सर्किट)।

अप्रयुक्त रहने के कारण -

- **अवसंरचना की कमी:** पहाड़ी इलाका, कम सड़क और रेल संपर्क, खराब डिजिटल अवसंरचना।
- **उग्रवाद और जातीय संघर्ष:** अनेक उग्रवादी समूहों की उपस्थिति और अंतर-जनजातीय तनाव (जैसे, कुकी-मेइती, नागा मुद्दे)।
- **ऐतिहासिक उपेक्षा:** स्वतंत्रता के बाद के भारत में निरंतर राजनीतिक और आर्थिक ध्यान का अभाव।
- **भौगोलिक अलगाव:** "चिकन नेक" (सिलीगुड़ी कॉरिडोर) मुख्य भूमि के साथ एकीकरण में बाधा उत्पन्न करता है।
- **नौकरशाही बाधाएँ:** धीमी परियोजना मंजूरी, भूमि अधिग्रहण के मुद्दे और पर्यावरण मंजूरी।
- **निजी निवेश का अभाव:** इसे अस्थिर माना जाता है, जिससे उच्च संभावना के बावजूद निवेशक हतोत्साहित होते हैं।

पूर्वोत्तर के लिए प्रमुख सरकारी पहल -

- **एक्ट ईस्ट नीति:** लुक ईस्ट का उन्नत संस्करण; पूर्वोत्तर के माध्यम से आसियान के साथ संपर्क पर जोर।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा: सेला टनल (अरुणाचल), भूपेन हजारिका सेतु (असम)।**
 - 11,000 किमी राजमार्ग, नए हवाई अड्डे, रेल लाइनें और **पूर्वोत्तर गैस ग्रिड** (1,600 किमी)।
- **शांति समझौते:**
 - **रूपरेखा समझौता** (2015)
 - **बोडो शांति समझौता** (2020)
 - **ब्रू-रियांग समझौता** (2020)
- **अफस्पा को हटाना:** असम, मणिपुर और नागालैंड के बड़े हिस्से से इसे हटा लिया गया।
- **निवेश प्रोत्साहन:** पूर्वोत्तर औद्योगिक विकास योजना (एनईआईडीएस)
 - असम में टाटा की ₹27,000 करोड़ की सेमीकंडक्टर इकाई।
- **डिजिटल एवं सामाजिक कार्यक्रम:** मोबाइल एवं इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार।
 - पीएमकेवीवाई के तहत कौशल विकास और अटल इनोवेशन मिशन के माध्यम से स्टार्टअप।

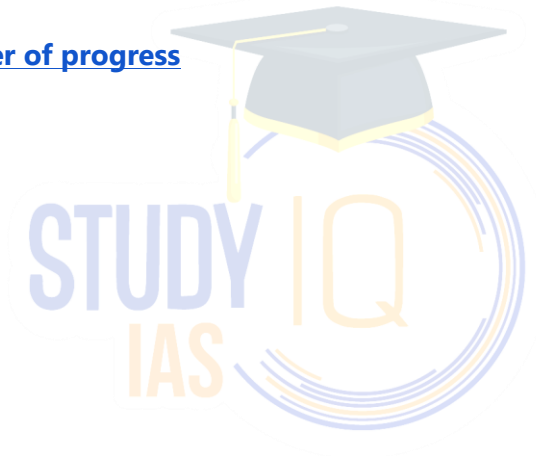
इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए भारत क्या कर सकता है?

- **समावेशी शासन:** स्वदेशी समुदायों की शिकायतों का समाधान करना, सीमा विवादों को सुलझाना और नीति-निर्माण में जनजातीय भागीदारी सुनिश्चित करना।
- **कनेक्टिविटी में सुधार:** सड़क, रेल, वायु और इंटरनेट बुनियादी ढांचे को पूरा और विस्तारित करना।
 - भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट को चालू करना।
- **पर्यटन को बढ़ावा देना:** पर्याप्त सुविधाओं और सुरक्षा उपायों के साथ पारिस्थितिकी पर्यटन और विरासत पर्यटन को बढ़ावा देना।
- **सतत विकास:** स्थानीय सहमति से पर्यावरण अनुकूल जल एवं सौर ऊर्जा परियोजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करना।
- **कौशल विकास:** क्षेत्र के युवाओं के लिए कौशल और उद्यमिता कार्यक्रमों में निवेश करें।
- **सीमा पार व्यापार:** म्यांमार और बांग्लादेश के साथ सीमा व्यापार बिंदुओं को बढ़ाना तथा एक्ट ईस्ट के साथ नीतियों को संरेखित करना।

निष्कर्ष -

पूर्वोक्त केवल भू-राजनीतिक सीमा नहीं है, बल्कि अपार अप्रयुक्त क्षमता वाला विकास इंजन है। हालाँकि, इसे अनलॉक करने के लिए विकास को संवेदनशीलता के साथ संतुलित करना, ऐतिहासिक शिकायतों को हल करना और पारिस्थितिक स्थिरता सुनिश्चित करना आवश्यक है। बुनियादी ढाँचे, समावेशन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संरेखित करने वाला एक एकीकृत दृष्टिकोण इस क्षेत्र को भारत की विकास कहानी और क्षेत्रीय कूटनीति का एक स्तंभ बना सकता है।

स्रोत: [The Hindu: Frontier of progress](#)



एक नए भारत-अफ्रीका डिजिटल समझौते का समय

संदर्भ

- **अफ्रीका दिवस (25 मई)** 1963 में अफ्रीकी एकता संगठन (अब अफ्रीकी संघ) की स्थापना की याद में मनाया जाता है।

समाचार के बारे में और अधिक जानकारी -

- इस संदर्भ में, अफ्रीकी संघ की डिजिटल परिवर्तन रणनीति (2020-2030) डिजिटल बुनियादी ढांचे और नवाचार को अपने सामाजिक-आर्थिक एजेंडे के केंद्र में रखती है।
- रणनीति सार्वजनिक डिजिटल वस्तुओं, कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता और सीमा पार डिजिटल एकीकरण पर जोर देती है।

भारत-अफ्रीका डिजिटल समझौते के लिए भारत के प्रयास -

भारत ने अफ्रीका के साथ अपनी डिजिटल विकास कूटनीति को लगातार बढ़ाया है, जो क्षमता निर्माण से लेकर सह-विकास तक विकसित हुई है:

- **पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क (2009):** उपग्रह और फाइबर-ऑप्टिक अवसंरचना के माध्यम से भारतीय विशेषज्ञता का उपयोग करके टेली-मेडिसिन और टेली-शिक्षा प्रदान की गई।
 - टीसीआईएल (टेलीकम्युनिकेशंस कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड) द्वारा कार्यान्वित।
- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) साझाकरण:** भारत अपने निम्न लागत वाले, स्केलेबल, ओपन-सोर्स DPI का निर्यात कर रहा है जैसे:
 - **आधार (डिजिटल आईडी):** आईआईआईटी-बी के सहयोग से टोगो द्वारा अपनाया गया।
 - **यूपीआई (भुगतान प्लेटफॉर्म):** नामीबिया ने एनपीसीआई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए (2024); घाना और जाम्बिया भी इसमें शामिल हो रहे हैं।
 - **CoWIN और DIKSHA:** अफ्रीका में स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणालियों की संभावनाएं।
- **संस्थागत सहयोग:** जाम्बिया की स्मार्ट सरकार पहल को आईआईआईटी-बी का समर्थन प्राप्त है।
 - **आईआईटी-एम ज़ांज़ीबार कैपस (2023):** डेटा साइंस और एआई में पाठ्यक्रम प्रदान करना।
 - छात्रवृत्ति और तकनीकी शिक्षा के वित्तपोषण के लिए भारतीय निजी क्षेत्र के साथ एकीकरण।
- **राजनयिक और विकास चैनल:**
 - डिजिटल बुनियादी ढांचे के लिए ऋण सहायता।
 - आईएफएस (भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन) मंच डिजिटल सहयोग को बढ़ावा दे रहा है।
 - स्मार्ट अफ्रीका एलायंस और डिजिटल अफ्रीका के लिए नीति और नियामक पहल (PRIDA) में भागीदारी।

भारत के लिए अवसर -

- **सॉफ्ट पावर विस्तार:** भारत का ओपन-सोर्स, समावेशी डिजिटल मॉडल निगरानी-भारी या स्वामित्व प्रणालियों (जैसे, चीन या बिग टेक प्लेटफॉर्म) के लिए मूल्य-आधारित विकल्प प्रदान करता है।
- **प्रौद्योगिकी कूटनीति:** किफायती, अंतर-संचालनीय और अनुकूलन योग्य समाधान प्रदान करके अफ्रीका का पसंदीदा डिजिटल परिवर्तन भागीदार बनने की क्षमता।
- **सामरिक प्रभाव:** डिजिटल कूटनीति चीन के प्रभुत्व को संतुलित कर सकती है और भारत को एक विश्वसनीय दक्षिण-दक्षिण साझेदार के रूप में स्थापित कर सकती है।
- **बाजार विस्तार:** भारत के फिनटेक, एडटेक और हेल्थटेक स्टार्टअप अफ्रीका की युवा, डिजिटल-प्रेमी आबादी का लाभ उठा सकते हैं।
- **कार्यबल और शिक्षा:** भारत अफ्रीका के अगली पीढ़ी के डिजिटल कार्यबल को प्रशिक्षित करने में मदद कर सकता है, जिससे भारत-अफ्रीका ज्ञान साझेदारी को बढ़ावा मिलेगा।

चुनौतियां

- **डिजिटल विभाजन:** डेटा की उच्च लागत, कम डिवाइस पहुंच, तथा अफ्रीका भर में पहुंच में लैंगिक अंतर।
 - कनेक्टिविटी में तीव्र ग्रामीण-शहरी असमानताएं।
- **ऊर्जा संबंधी बाधाएं:** डिजिटल बुनियादी ढांचे के लिए विश्वसनीय बिजली की आवश्यकता होती है, जिसकी कई अफ्रीकी क्षेत्रों में कमी है।
- **अन्य शक्तियों से प्रतिस्पर्धा:** चीन का कम लागत वाला, बुनियादी ढांचे पर आधारित डिजिटल मॉडल कुछ सरकारों के लिए अधिक आकर्षक है।
 - यूरोपीय संघ और अमेरिका भी मजबूत वित्तीय समर्थन के साथ वैकल्पिक ढांचे की पेशकश करते हैं।
- **मापनीयता और स्थानीय अनुकूलन:** सभी के लिए एक जैसा भारतीय समाधान स्थानीयकरण और राज्य की भागीदारी के बिना विफल हो सकता है।
- **सुरक्षा एवं डेटा संप्रभुता संबंधी चिंताएं:** अफ्रीकी राष्ट्र डेटा गोपनीयता, संप्रभुता और साइबर जोखिमों के प्रति तेजी से संवेदनशील हो रहे हैं।

आगे की राह -

- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की तुलना में सह-विकास:** भारतीय समाधानों के निर्यात से हटकर अफ्रीकी हितधारकों के साथ प्लेटफार्मों का सह-निर्माण करना।
- **प्रासंगिक अनुकूलन:** DPI मॉडल को स्थानीय आवश्यकताओं, भाषाओं और शासन ढांचे के अनुरूप बनाना।
- **ऊर्जा-डिजिटल संबंध:** दीर्घकालिक स्थिरता के लिए डिजिटल योजनाओं को नवीकरणीय ऊर्जा निवेश के साथ एकीकृत करना।
- **संस्थागत साझेदारियां:** अन्य देशों में आईआईटी जंजीबार जैसे सफल मॉडलों का विस्तार करना; संयुक्त अनुसंधान केंद्र और डिजिटल विश्वविद्यालय बनाना।
- **बहु-हितधारक दृष्टिकोण:** अफ्रीका-केंद्रित डिजिटल नवाचार में भारतीय स्टार्टअप, विश्वविद्यालयों, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को शामिल करना।
- **डिजिटल संप्रभुता का सम्मान:** भारत को एक ऐसे साझेदार के रूप में स्थापित करना जो डेटा स्वायत्तता, पारदर्शिता और नागरिक अधिकारों का सम्मान करता हो।

निष्कर्ष

अफ्रीका में भारत की डिजिटल कूटनीति एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। इसका DPI मॉडल डिजिटल गवर्नेंस के लिए एक सम्मोहक, लोगों को प्राथमिकता देने वाला दृष्टिकोण प्रदान करता है - वहनीय, अनुकूलनीय और नैतिक। दीर्घकालिक संस्थागत साझेदारी का निर्माण करके और डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्रों का सह-विकास करके, भारत-अफ्रीका डिजिटल सहयोग न केवल विभाजन को पाट सकता है बल्कि डिजिटल युग के लिए राष्ट्रों को सशक्त भी बना सकता है, जो वैश्विक दक्षिण में बराबरी की सच्ची साझेदारी को चिह्नित करता है।

स्रोत: [The Hindu: Time for a new India-Africa digital compact](#)

व्यापार समझौते भारतीय कृषि के लिए अवसर लाएंगे

संदर्भ

टैरिफ में बदलाव और वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव के बीच, वित्त वर्ष 2024-25 में भारत का व्यापार प्रदर्शन चिंतनीय है। भारत-यूके एफटीए संपन्न हो चुका है, जबकि अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए बातचीत जारी है।

भारत का समग्र व्यापार प्रदर्शन (वित्त वर्ष 2024-25) -

- **कुल निर्यात (वस्तुएं + सेवाएं):** \$820.93 बिलियन (वित्त वर्ष 24 से ↑ 6.5%)
 - **व्यापारिक वस्तुएं:** \$437.42 बिलियन (53%)
 - **सेवाएं:** \$383.51 बिलियन (47%)
- **कुल आयात:** \$915.19 बिलियन (↑ वित्त वर्ष 24 से 6.85%)
 - **व्यापारिक वस्तुएं:** \$720.24 बिलियन (79%)
 - **सेवाएं:** \$194.95 बिलियन (21%)
- **व्यापार घाटा:** \$94.26 बिलियन (वित्त वर्ष 24 में \$78.39 बिलियन से ↑)
- **व्यापार-जीडीपी अनुपात:** 41.4% (नाममात्र जीडीपी: \$4.19 ट्रिलियन)

कृषि व्यापार प्रदर्शन -

- **कृषि-निर्यात:** \$52 बिलियन (वित्त वर्ष 24 में \$48.9 बिलियन से ↑ 6.3%)
- **कृषि-आयात:** \$38.2 बिलियन (↑ वित्त वर्ष 24 में \$32.8 बिलियन से 16.5%)
- **कृषि-व्यापार अधिशेष:** 13.8 बिलियन डॉलर (वित्त वर्ष 2014 में 27.7 बिलियन डॉलर से ↓)
- **प्रमुख कृषि निर्यात:**
 - **चावल:** 20.2 एमएमटी, मूल्य 12.5 बिलियन डॉलर
 - **समुद्री उत्पाद:** 7.4 बिलियन डॉलर
 - **मसाले:** 4.5 बिलियन डॉलर
 - **भैंस का मांस:** 4.1 बिलियन डॉलर
 - **प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, चाय/कॉफी, चीनी भी महत्वपूर्ण**
- **प्रमुख कृषि आयात:**
 - **खाद्य तेल:** 16.4 एमएमटी के लिए 17.3 बिलियन डॉलर (कृषि आयात का 45.4%)

भारत के कृषि व्यापार में चुनौतियाँ -

- **नीतिगत अनिश्चितता:** बार-बार निर्यात प्रतिबंध और आवश्यक वस्तुओं (जैसे, चावल, गेहूं) पर अंकुश से दीर्घकालिक व्यापार गति बाधित होती है।
- **स्थिर वृद्धि:** कृषि-निर्यात में वार्षिक वृद्धि केवल 2.3% रही (वित्त वर्ष 15-वित्त वर्ष 25), जबकि वित्त वर्ष 05-वित्त वर्ष 14 में यह वृद्धि 20% थी।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएं:** चावल जैसी अधिक जल खपत वाली फसलों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण भूजल समाप्त हो जाता है (लगभग 40 बीसीएम "आभासी जल" के रूप में निर्यात किया जाता है)।
- **वैश्विक मूल्य अस्थिरता:** भारतीय कृषि-निर्यात वैश्विक वस्तु मूल्यों में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील हैं।
- **भारी सब्सिडी निर्भरता:** चावल जैसी फसलों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा अस्थिर सब्सिडी (बिजली, पानी, उर्वरक) द्वारा संचालित होती है।
- **आयात निर्भरता:** खाद्य तेल आयात पर अत्यधिक निर्भरता (घरेलू खपत का 55-60%), विशेष रूप से पाम तेल।

आगे की राह -

- **नीति स्थिरता:** तदर्थ व्यापार प्रतिबंधों को न्यूनतम करना; पूर्वानुमानित निर्यात नीतियां अपनाना।

- **टिकाऊ निर्यात:** राजस्व को अनुकूलित करने के लिए चावल जैसी मूल्य-संवेदनशील फसलों पर मध्यम निर्यात शुल्क (10-15%) लगाना।
- **उत्पादकता बढ़ाना:** अनुसंधान एवं विकास, परिशुद्ध कृषि, बेहतर बीज और आधुनिक सिंचाई विधियों (जैसे, उर्वरीकरण) में निवेश करना।
- **तेल पाम को बढ़ावा:** गर्भवस्था के दौरान वित्तीय सहायता और विनियमित कॉर्पोरेट-एफपीओ साझेदारी के साथ घरेलू पाम तेल की खेती को बढ़ावा देना।
- **जल दक्षता:** पर्यावरणीय तनाव को कम करने के लिए कम पानी वाली फसलों को प्रोत्साहित करें और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देना।
- **बाजार विविधीकरण:** नए बाजारों की खोज करें और कुछ निर्यात वस्तुओं या क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भरता कम करना।

स्रोत: [The Hindu: Cultivating a global farm](#)

